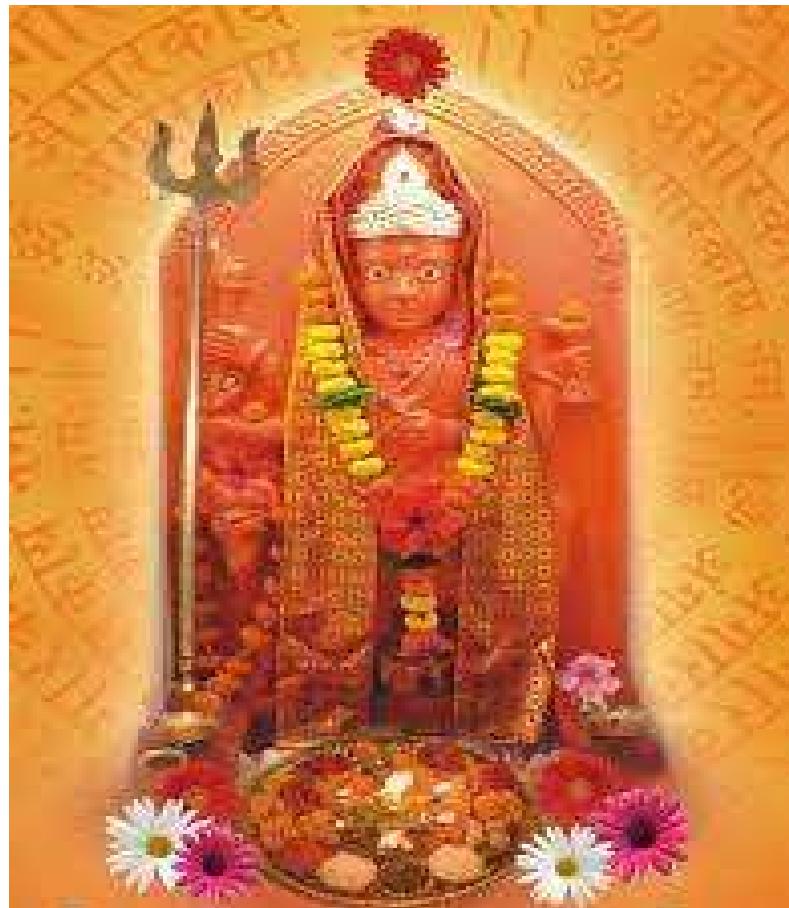


श्रीमंगल ग्रह शांति पूजा



Gurudev Raj Verma
9897507933, 7500292413

आयुर्वेद के ग्रन्थ ऐषज्यरत्नावली में लिखा है— सूर्यादि ग्रहों की प्रतिकूलता में व्याधिग्रस्त रोगी को औषधि भी अनुकूल फल नहीं देती, क्योंकि औषधि के गुण प्रभाव बल वीर्य का ग्रह हरण कर लेते हैं। अतः पहले ग्रहों को अनुकूल करके बाद में चिकित्सा करनी चाहिये।

महर्षि वसिष्ठ का कथन है— दुःस्वज्ञ होने पर, अनिष्टकर निमित्त उपस्थित होने पर, ग्रहों की प्रतिकूलता में, जन्म में, बारहवें, चौथे अथवा आठवें स्थान में बृहस्पति, शनैश्चर, मंगल और विशेषकर सूर्य के रहने से धन की हानि, मृत्यु का भय एवं और भी सब संकट आकर मनुष्य को दुःखित करते हैं।

शिवपुराणमें मंगलदेवता को भूमिपुत्र कहा गया है। ये भूमि, शक्ति, वाहन और उच्च अधिकारके स्वामी हैं। मंगलवार को इनकी पूजा कथा जप करने से जीवनमें मंगल ही मंगल होता है। भूमि वाद-विवाद, भूमि अथवा गृह की प्राप्ति हेतु इनके साथ पृथ्वीदेवी की विधिवत साधना शुभ परिणाम देती है। मनुष्यमें हिंसा, साहस, पशुत्व, युद्ध, भाई, ऋण, भूमि, कचहरी, मुकदमा, थाना, रक्त, हड्डी टूटना, वीरता, खून, सम्पत्ति, उच्च अधिकार, पूर्ण स्वतंत्रता, शारीरिक बल, आंतक, प्रतिशोध, उत्साह, अंहकार, क्रोध, कठोरता आदि का विचार मंगलग्रह से किया जाता है। कार्य अनुसार मंगलवार को इनके साथ भूमिदेवी, हनुमानजी अथवा मंगल चण्डिकाका पूजन करना चाहिये। पूजन एवं दान रक्तवर्ण सामग्रियों से करना चाहिये।

षडक्षर मंत्र- ‘ॐ हां हंसः खः खः।’ इस मंत्र के ऋषि विरूप, छन्द गायत्री और देवता धरात्मज हैं।

ध्यानम्- जपाभं शिवस्वेदजं हस्तोपदम् गदा शूलं शक्तिर्वरं धारयन्तम्। अवन्तीसमुथं सुमेषासनस्थं धरानन्दनं रक्तवस्त्रं समीडे।

अष्टाक्षर मंत्र- ‘ॐ अंगारकाय नमः।’ इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता भूमिपुत्र हैं। आं, इं, ऊं, ऐं, ओं, अः से षडंगन्यास करे।

ध्यानम्- नमाम्य अंगारकं रक्तं रक्ताम्बर विभूषणम्। जानुस्थ वामहस्ताढयं भाजनेतर पाणिकम्॥

दशाक्षर मंत्र- ‘ॐ श्रीं क्लीं मनुं भौमाय नमः।’ इस मंत्रके ऋषि विरूपाक्ष, छन्द गायत्री, देवता मंगल, बीज ह्रीं, शक्ति श्रीं तथा कीलक क्लीं है।

हां, ह्रीं, हूं, हौं, हः से षडंगन्यास करे।

एकादशाक्षरमंत्र- ‘ॐ ह्रीं श्रीं म्लां मं मंगलाय नमः।’ ऋष्यादि दशाक्षर के समान ही हैं।

मंगल गायत्री- ‘ॐ अंगारकाय विदमहे शक्तिहस्ताय धीमहि तनः भौमः प्रचोदयात्।’

श्रीमंगल नामावलि स्तोत्रम्- विनियोग:- ॐ अस्य श्रीभौमस्तोत्रस्य श्रीगर्ग ऋषिः, श्रीमंगलो देवता, त्रिष्टुप् छन्दः ऋणापहरणे जपे विनियोगः।

ध्यानम्- रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्मुखोमेघगदो गदाधृक्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशांतः॥

स्तोत्रम्- ॐ मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः। स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थसाधकः॥

लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः। धरात्मजः कुजो भौमौ भूतिदो भूमिनन्दनः॥

अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः। वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥

एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। ऋणं न जायते तस्य धनं प्राजोत्यसंशयम्॥

अंगारको अतिवलवानपि यो ग्रहाणां स्वेदादभव स्त्रिनयनस्य पिनाकपाणेः। आरक्त चन्दन सुशीतलवारिणा योष्यभ्यर्चितोथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम्॥

भो भो धरात्मज इति प्रथितः पृथिव्यां दुःखापहो दुरितशोक समस्तहर्ता।
नृणामृणं हरति तान्धनिनः प्रकुर्याद्यः पूजितः सकलमंगलवासरेषु ॥

एकेन हस्तेन गदां विभर्ति त्रिशूलमन्येन ऋजुक्रमेण। शक्तिं सदान्येन वरं
ददाति चतुर्भुजो मंगलमादधातु ॥

यो मंगलो मंगलमाद धाति मध्य ग्रहो यच्छति वाञ्छितार्थम्। धर्मार्थ कामादिसुखं
प्रभुत्वं कलत्रपुत्रैर्न कदा वियोगः ॥

कनक मयशरीर स्तेजसा दुर्निरीक्ष्यो हुतवह समकांतिर्मालवे लब्धजन्मा।
अवनिजतनयेषु श्रूयते यः पुराणो दिशतु मम विभूतिं भूमिजः सप्रभावः ॥

श्रीमंगल कवचम्- विनियोगः- ऊँ अस्य श्री अंगारक कवच स्तोत्र मंत्रस्य
कश्यप ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः, अंगारको देवता, भौमप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ध्यानम्- रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्। धरासुतः
शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः ॥

कवचम्- अंगारकः शिरोरक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः। श्रवौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे
रक्तलोचनः ॥

नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः। भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ
शक्तिधरहस्तथा॥

वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं पातु लोहितः। कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव
धरासुतः॥

जानुजंघे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा। सर्वाण्यन्यानि चांगानि रक्षेन्मे
मेषवाहनः॥

य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम्। भूत् प्रेत पिशाचानां नाशनं
सर्वसिद्धिदम्॥

सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पत्प्रदं शुभम्। भुक्ति मुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्यवर्धनम्।
रोगबंध विमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः॥

श्रीमंगल अष्टोत्तरशत नामावलि- ॐ मं महीसुताय नमः। ॐ मं महाभागाय
नमः। ॐ मं मंगलाय नमः। ॐ मं मंगलप्रदाय नमः। ॐ मं महावीराय
नमः। ॐ मं महाशूराय नमः। ॐ मं महाबलपराक्रमाय नमः। ॐ मं महारौद्राय
नमः। ॐ मं महाभद्राय नमः। ॐ मं माननीयाय नमः। ॐ मं दयाकराय
नमः। ॐ मं मानदाय नमः। ॐ मं अर्मषणाय नमः। ॐ मं क्रूराय नमः। ॐ

मं ताप पाप विवर्जिताय नमः। ऊँ मं सुप्रतीपाय नमः। ऊँ मं सुताम्राक्षाय नमः। ऊँ मं सुब्रह्मणाय नमः। ऊँ मं धर्मात्मजाय नमः। ऊँ मं वक्तृसभादि गमनाय नमः। ऊँ मं वरेण्याय नमः। ऊँ मं वरदाय नमः। ऊँ मं सुखिने नमः। ऊँ मं वीरभद्राय नमः। ऊँ मं विरुपाक्षाय नमः। ऊँ विदूरस्थाय नमः। मं विभावसवे नमः। ऊँ मं नक्षत्रचक्र संचारिणे नमः। ऊँ मं नक्षत्ररूपाय नमः। ऊँ मं क्षात्रवर्जिताय नमः। ऊँ मं क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ताय नमः। ऊँ मं क्षमायुक्ताय नमः। ऊँ मं विचक्षणाय नमः। ऊँ मं अक्षीणफलदाय नमः। ऊँ मं चक्षुर्गाचराय नमः। ऊँ मं शुभ लक्षणाय नमः। ऊँ मं वीतरागाय नमः। ऊँ मं वीतभयाय नमः। ऊँ मं वीचिविरावाय नमः। ऊँ मं विश्वकारणाय नमः। ऊँ मं नक्षत्रराशिसंचारिणे नमः। ऊँ मं नानाभय निकृन्तनाय नमः। ऊँ मं कमनीयाय नमः। ऊँ मं दयासाराय नमः। ऊँ मं कनत्कनकभूषणाय नमः। ऊँ मं भयत्राणाय नमः। ऊँ मं भव्यफलदाय नमः। ऊँ मं भक्ता भयवरप्रदाय नमः। ऊँ मं शत्रुहन्ते नमः। ऊँ मं शमोपेताय नमः। ऊँ मं शरणागत पोषणाय नमः। ऊँ मं साहसिने नमः। ऊँ मं सदगुणाध्यक्षाय नमः। ऊँ मं साधवे नमः। ऊँ मं समरदुर्जयाय नमः। ऊँ मं दुष्टदूराय नमः। ऊँ मं शिष्टपूजाय नमः। ऊँ मं सर्वकष्टनिवारणाय नमः। ऊँ मं दुश्चेष्टावारकाय नमः। ऊँ मं दुःखभंजनाय नमः। ऊँ मं दुर्धर्षाय नमः। ऊँ मं हरये नमः। ऊँ मं दुःस्वज्ञहन्ते नमः। ऊँ मं दुर्धराय नमः। ऊँ मं

दुष्टगर्वविमोचनाय नमः। ऊँ मं भरद्वाजकुलोदभूताय नमः। ऊँ मं भूसुताय नमः। ऊँ मं भव्यभूषणाय नमः। ऊँ मं रक्ताम्बराय नमः। ऊँ मं रक्तवपुषे नमः। ऊँ मं भक्तपालनतत्पराय नमः। ऊँ मं चतुर्भुजाय नमः। ऊँ मं गदाधारिणे नमः। ऊँ मं मेषवाहनाय नमः। ऊँ मं अमितनाशनाय नमः। ऊँ मं शक्तिशूलधराय नमः। ऊँ मं शक्ताय नमः। ऊँ मं शस्त्र विद्याविशारदाय नमः। ऊँ मं तार्किकाय नमः। ऊँ मं तामसाधाराय नमः। ऊँ मं तपस्त्विने नमः। ऊँ मं ताम्रलोचनाय नमः। ऊँ मं तप्तकांचन संकाशाय नमः। ऊँ मं रक्तकिञ्जुल्क सन्निभाय नमः। ऊँ मं गोत्राधिदेवाय नमः। ऊँ मं गोमध्यचराय नमः। ऊँ मं गुणविभूषणाय नमः। ऊँ मं असृजे नमः। ऊँ मं अंगारकाय नमः। ऊँ मं अवन्तिदेशाधीशाय नमः। ऊँ मं जनार्दनाय नमः। ऊँ मं सूर्ययाम्य प्रदेशस्थाय नमः। ऊँ मं यौवनाय नमः। ऊँ मं याम्यदिङ् मुखाय नमः। ऊँ मं लोहितांगाय नमः। ऊँ मं त्रिदशाधिप सन्नुताय नमः। ऊँ मं शुचये नमः। ऊँ मं शुचिकराय नमः। ऊँ मं शूराय नमः। ऊँ मं शुचिवश्याय नमः। ऊँ मं शुभावहाय नमः। ऊँ मं मेषवृश्चिकराशीशाय नमः। ऊँ मं मेधाविने नमः। ऊँ मं मित भाषणाय नमः। ऊँ मं सुखप्रदाय नमः। ऊँ मं सुरुपाक्षाय नमः। ऊँ मं सर्वाभीष्ट फलप्रदाय नमः। ऊँ मं सर्वरोगापहारकाय नमः।

धनप्रद मंगल स्तोत्र- विनियोग:- ॐ अस्य श्रीभौम स्तोत्रस्य श्रीगर्ग ऋषि, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीमंगलो देवता, ऋणहरणे धनप्राप्तयर्थं च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- ॐ श्री गर्ग ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमंगल देवतायै नमः हृदि। ऋण हरणे धन प्राप्तयर्थं च विनियोगाय नमः अंजलौ।

ध्यानम्- रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगदो गदाभृत्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः॥

स्तोत्रम्- ॐ मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः। स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थं साधकः॥

लेहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः। धरात्मजः कुजो भौमो भूमिदो भूमिनन्दनः॥

अंगारको यमश्चैव सर्वरोगाप हारकः। वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकाम फलप्रदः॥

फलश्रुति- एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। ऋणं न जायते तस्य धनं प्राज्ञोति असंशयः॥

अंगारकोऽति बलवानपि यो ग्रहाणां स्वेदोदभवः त्रिनयनस्य पिनाकपाणेः। आरक्त चन्दन सुशीतलवारिणा यः। अभ्यर्चितोऽथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम्॥

पुष्पांजलि- धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं
मंगलं प्रणमाम्यहम्॥

ऋणहर्त्रं नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्रयनाशिने। नभसि घोतमानाय
सर्वकल्याणकारिणे॥

देवदानवं गंधर्वं यक्षं राक्षसं पन्नगाः। सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमः
धरणीसूनवे॥

यो वक्रगतिमापन्नो नृणां दुःखं प्रयच्छति। पूजितः सुखसौभाग्यं तस्मै क्षमासूनवे
नमः॥

प्रसादं कुरु मे नाथ! मंगलप्रद मंगल! मेषवाहन रुद्रात्मन! सुखं देहि धनं
यशः॥

स्तोत्रम् अंगराक स्येत्पठनीयं सदा नृभिः। न तेषां भौमजा पीड़ा स्वल्पाऽपि
भवति क्वचित्॥

अंगारक महाभाग भगवन्भक्त वत्सलं। त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु
विनाशय॥

ऋणरोगादि दारिद्रयं ये चान्ये हयल्पमृत्यु। भयकलेश मनस्तापा नश्यन्तु मम
सर्वदा॥

अतिवक्रदुराध्य भोगमुक्तजितात्मनः। दुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि
तत्क्षणात्॥

विरिंच शक्र विष्णुनां मनुष्याणां तु स्त्रिस्तथा। तेन सर्वसहजेन ग्रहराजो
महाबलः॥

पुत्रान् देहि धनं देहि त्वमामि शरणं गतः। ऋणदारिद्रयं दुःखश्च शत्रुणां तु
व्यपोहतो॥

Gurudev Raj Verma

Mob- +91-9897507933 +91-7500292413

Website- mahakalshakti.wordpress.com

Website- www.scribd.com/mahakalshakti

Email- mahakalshakti@gmail.com

Gurudev Raj Verma
9897507933, 7500292413